ISSN 2231-1629 Knowledge Resonance
A Half Yearly National Peer-Reviewed & Indexing with SJIF Impact Factor Research Journal
IMPACT FACTOR 8.072

महात्मा गांधी और स्वच्छ भारत

डॉ. पुरुषोत्तम मनगटे
धारेश्वर शिक्षण संस्था संचलित, कला व विज्ञान महाविद्यालय, चिंचोली लि.
ता.कन्नड जि. औरंगाबाद.

सारांश

महात्मा गांधी जी के नेतृत्व में भारतीयों को आजादी तो मिली लेकिन स्वच्छ भारत का उनका सपना अभी अधूरा है, गांधी ने कहा था, 'स्वच्छता स्वतंत्रा से अधिक महत्वपूर्ण है' गांधीजी ने साफ-सफाई को गांधीवादी जीवन शैली का अभिन्न अंग बनाया, उनका सपना था सभी के लिए संपूर्ण स्वच्छता शारीरिक तंदुरुस्ती और स्वस्थ पर्यावरण के लिए स्वच्छता सबसे जरूरी है, इसका असर सार्वजनिक और व्यक्तिगत स्वच्छता पर पड़ता है! जनसभागीता और जनजागरूकता पर विशेष बल दिया और साफ सफाई के लिए आत्म-प्रेरित प्रयासों को आवश्यक माना! स्वच्छता को सामूहिक जिम्मेदारी बताते हुए उन्होंने यह रेखांकित किया कि इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को चिंता करनी होगी और जिम्मेदारी लेनी होगी! स्वच्छता चेतावनीयो, कानूनों अथवा अध्यादेश जारी करके इसे हासिल नहीं किया जा सकता है! गांधीजी ने कई जनसभाओं, छोटे समूहों, स्वयंसेवकों, महिलाओं एवं आश्रमवायियों को संबोधित किया, कांग्रेस के लगभग प्रत्येक बड़े सम्मेलन में गांधीजी अपने भाषण में सफाई का मुद्दा जरूर उठाते थे!

वास्तव में महात्मा गांधी, भारतीय इतिहास के सबसे प्रभावशाली नेताओं में से एक थे, उन्होंने स्वच्छता पर बहुत महत्व दिया। उनका मानना था कि स्वच्छता शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों तरह के कल्याण के लिए आवश्यक है और यह स्वस्थ और सुखी जीवन का एक मूलभूत पहलू है।

प्रस्ताविक

गांधीजी के समय में भारत में बहुत ही गंदगी थी । वहाँ सड़कों पर गंदगी थी! गांधीजी ने स्वच्छता अभियान शुरू किया जिसके तहत लोगों को स्वच्छता के महत्व को समझाया जाता था। उन्होंने अधिक से अधिक लोगों को स्वच्छता के लिए सक्रिय होने के लिए प्रोत्साहित किया और उन्हें स्वच्छता की ओर आकर्षित किया। गांधीजी ने अपनी आध्यात्मिक दृष्टि से भी स्वच्छता को बढ़ावा दिया। उन्होंने बताया कि स्वच्छता एक आध्यात्मिक विषय है जो हमारे मन को भी शुद्ध करता है। महात्मा गांधी स्वच्छता के महत्व को बहुत महत्वपूर्ण मानते थे और वे इसे जीवन भर अपनाते हैं। उन्होंने स्वच्छता को स्वास्थ्य, विकास और सामंजस्य से जोड़ा था। वह स्वच्छता के माध्यम से एक समरस और संगठित समाज का निर्माण करना चाहते थे।

महात्मा गांधी ने विभिन्न स्वच्छता संबंधित अभियान संचालित किया था, जिसमें सफाई, धाराएं, शौच रोकथाम, नदियों और तालाबों के संरक्षण, सार्वजनिक स्थानों की सफाई-सफाई, आदि शामिल थे उन्होंने स्वच्छता के महत्व को स्वयं अपने जीवन में दिखाया और लोगों को समझा और गोद की अपील की। वे अक्सर जल-जीवन के दौरान स्वच्छता के महत्व को व्यक्त करते थे और जनता से इसे चाप की अपील करते थे। वे स्वच्छता के माध्यम से आर्थिक विकास के बारे में भी बात करते थे। वे समुदाय के सदस्यों के शौचालयों का निर्माण करने के लिए ऐसा करते हैं जो आर्थिक रूप से उन्हें लाभ देते हैं!

अध्ययनका उद्देश:-

1. महात्मा गांधी की स्वच्छता विषयक विचारकार्य का अध्ययन करना।
2. स्वच्छ भारत मिशन के प्रभाव पर गांधीजीके विचार का अध्ययन करना।

अनुसंधान की विधि:-

प्रस्तुत अध्ययन मे विवरनात्मक अनुसंधान विधी का प्रयोग किया गया है, द्वितीय तथ्य के संकलन मे पुस्तक को और जर्नल रिपोर्ट आधी का सारा लिया गया है!

महात्मा गांधी और स्वच्छ भारत

महात्मा गांधी स्वच्छता के लिए एक सशक्त वकील थे और वे हमेशा स्वच्छता और स्वच्छता की महनत्ता को समझते थे। उन्होंने भारत को स्वतंत्रता दिलाने के साथ-साथ स्वच्छता के मुद्दों पर भी काफी ध्यान दिया। गांधीजी ने स्वच्छता को एक महत्वपूर्ण जीवन शैली के रूप में

स्वीकार किया था। उन्होंने कहा था कि स्वच्छता ईश्वर की दृष्टि है और यह हमें स्वस्थ रखती है। उन्होंने लोगों को अपने घरों के आस-पास साफ-सुथरे रखने की सलाह दी थी और सड़कों, बाजारों और जनसमूहों में स्वच्छता बनाए रखने के लिए प्रेरित किया था।

भारत सरकार ने स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत की है, जो गांधीजी के स्वच्छता के संदेश को आगे बढ़ाने का एक प्रयास है। यह अभियान समुदायों को स्वच्छता के मुद्दों पर जागरूक करने और देश में स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए उनके साथ साथ सरकार को भी जिम्मेदार ठहराता है। महात्मा गांधी स्वच्छता के आदर्श के प्रभावशाली अनुभव थे। उन्होंने हमेशा स्वच्छता को एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में देखा था और इसे अपने जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा मानते थे। वे एक आदर्श महापुरुष थे, जिन्होंने न केवल भारत बल्कि पूरी दुनिया को स्वच्छता के महत्व को समझाया था। उनके द्वारा चलाये गए आंदोलनों में, जैसे कि, स्वच्छता आंदोलन, उन्होंने लोगों को यह बताया कि, स्वच्छता एक महत्वपूर्ण समस्या है। जो समाज के सभी वर्गों को दोषी बनाती है। वे स्वच्छता के महत्व को इतना समझते थे कि उन्होंने अपने जीवन में भी स्वच्छता को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया था। उनके घर में हमेशा स्वच्छता रहती थी और उन्होंने लोगों को भी यह सिखाया कि, स्वच्छता की रखरखाव एक नियमित व्यवस्था होनी चाहिए। महात्मा गांधी का स्वच्छता के प्रति जो उनका समर्पण था, वह आज भी हमें प्रेरित करता है!

गांधीजी ने अपने बचपन मे भारतीय मे स्वच्छता की प्रति उदासीनता की कमी को महसूस कर लिया था!उन्होने सभी और विकसित मानव समाज के लिये स्वच्छता के उंच मानधन की आवश्यकता को समजा। पश्चिमी समाज मे उनके पारंपारिक अनुभव से भी विकसित हुई दक्षिण आफ्रिका के दिनों से लेकर भारत तक व अपने पूरे जीवन काल मी निरंतर बिना थके स्वच्छता की प्रति लोगो को जागृत करते रहे। गांधीजी के लिए स्वच्छता एक बहुत महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दा था! काँग्रेस के करीब करीब हर संमेलन मे दिये अपने भाषण मे गांधीजी स्वच्छता के मामले उठाते थे। एप्रिल १९२४ मे उन्होने दाहोश शहर के काँग्रेस सदस्य को अच्छे साफसफाई रखने के लिए बधाई थी और सुजाओ दिया, की वह अच्युत समजे जानेवाले समुदाय के इलाको मे जाये और उन्हे स्वच्छता की प्रति जागृती जगाये! गांधीजी ने हमारा ध्यान मे इस और खिचा की हमे पश्चिमी देशों में सफाई रखने के तरीके और उनका उसी तरह पालन करना चाहिए! ३१ डिसेंबर १९२४ को बेलगाव मे अपने नागरिक अभिनंदन के जवाब मे उन्होने कहा था! हमे पश्चिमे से हम एक चीज जरूर सिक सकते है और हमे सीखने चाहिये वो है! शहरो की सफाई का शास्त्र पश्चिमे के लोगो सामुदायिक आरोग्य और सफाई का एक शास्त्रही तयार करणे है! जिसे हमे बहुत कुछ सीखना है बेशक सफाई की पश्चिमी की पद्धती हो, हम अपनी आवश्यकता के अनुसार बदल सकते है!

हमने राष्ट्रीय सफाई जरुरी गुण माना और ना उसका विकास ही किया! एवरीवास के कारण हम आपने डंग से नहा भर लेते है। मगर जिस नदी तलाब या कुये के किनारे हम श्राद्ध या वैसे ही दुसरी कोई धार्मिक क्रिया करते है और जीन जलाशो मे पवित्र होने के विचार से हम नाथे है! उनके पाणी को बिघडणे या गंधा करने मे हम आप कोई इज्जत नही होती। हमारी कमजोरी को मै एक बडा दुर्गुण मानता हूँ, इस दुर्गुण की हमारे गाव की और हमारे पवित्र की बिमारी है।

महात्मा गांधी ने कहा, 'जब तक आप झाडू को अपने हातोमे नही लेते तब तक अपने गाव और शहर को साफ नही कर सकते। जब तक झाडू और पावडे को भी गर्व के साथ हाथ मे ले। जैसे किये कलम और पेन्सिल को लेते है! तो इस कार्य मे खर्च का कोई सवाल ही नही उठेगा, अगर किसी खर्च की जरुरत पडेंगी और शायद कुछ किटाणू नाशक दवाई का अनुसरण करते हुए,मेला धोने वालो के को इस तरह की कार्य से मुक्ती दिलाने के लिए हरिजन सेवा संघ ने १९६३ मे गुजरात के अहमदाबाद के साबरमती आश्रम मे सफाई विद्यालय की स्थापना की। सफाई विद्यालय मे प्राथमिक उद्देश, सफाई कर्मिया और मेला धोने वालो का विकास ग्रामीण योजना गुजरात विद्यापीठ की स्थापना की! यह विद्यापीठ आश्रम के जीवन पद्धती पर आधारित था इसलिये वहा शिक्षको छात्र और अन्य स्वयंसेवक को और कार्यकर्ताओ को प्रारंभ से ही स्वच्छता के कार्य मे लगाया जाता था! जो लोग गांधीजी के साथ रहने की इच्छा जाहीर करते थे, इस बारे मे उनकी परीक्षा होती ती। आश्रम मे रहने वाले को आश्रम की सफाई का काम करणा शामिल है! स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार द्वारा एक राष्ट्रीय स्तर पर शुरू किया गया है। जो भारत को स्वच्छ बनाने के लिए उत्साहित करने

के लिए अनुदान और अन्य सुविधाएं प्रदान करता है। महात्मा गांधी ने भी भारत को स्वच्छ बनाने की बहुत समय से बात की थी और उन्होंने अपने समाज सुधार अभियान में स्वच्छता को बहुत महत्व दिया था।

महात्मा गांधी ने भारत की स्वच्छता के लिए एक सकारात्मक संदेश दिया था और उन्होंने इसे एक महत्वपूर्ण मेल माना था। वे स्वच्छता को एक धार्मिक और सामाजिक उपलब्धि के रूप में देखते हैं जो स्वस्थ जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है। वे स्वच्छता के लिए संगठित काम के महत्व को समझते थे और साथ ही स्वच्छता के लिए लोगों को जागरूक करने की भी अहमियत को समझते थे।

महात्मा गांधी और स्वच्छता भारत मिशन

महात्मा गांधी के पास भारत की सफाई के लिए एक मजबूत दृष्टि थी, और उनका मानना था कि स्वच्छता और स्वच्छता इसके लोगों की भलाई के लिए आवश्यक थी। उन्होंने "स्वच्छ भारत" अभियान या "स्वच्छ भारत अभियान" सहित भारत में स्वच्छता और स्वच्छता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कई पहलें शुरू कीं, जो आज भी प्रासंगिक हैं। गांधी का मानना था कि, भारत की सफाई केवल शारीरिक सफाई का मामला नहीं है। बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक शुद्धता का भी मामला है। उन्होंने लोगों को अपने आसपास के वातावरण को साफ रखने की जिम्मेदारी लेने और स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण को बढ़ावा देने के लिए मिलकर काम करने के लिए प्रोत्साहित किया। गांधी की सबसे उल्लेखनीय पहलों में से एक , गांधी के साथ सामाजिक पाप थे, जिसमें उन व्यवहारों की एक सूची शामिल थी, जो उनके अनुसार समाज के लिए हानिकारक थे। इन पापों में से एक "धन की पूजा" था, जिसे वह भारत में स्वच्छता और स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए एक बड़ी बाधा मानते थे।

गांधी ने स्वच्छता को बढ़ावा देने में आत्मनिर्भरता और आत्मनिर्भरता के महत्व पर भी जोर दिया। उन्होंने पारंपरिक सफाई विधियों के उपयोग को प्रोत्साहित किया, जैसे कि सफाई के लिए प्राकृतिक सामग्री का उपयोग और शौचालयों की खाद का उपयोग, जो उनका मानना था कि अधिक टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल थे। कुल मिलाकर, भारत की सफाई के लिए महात्मा गांधी का दृष्टिकोण व्यक्तिगत जिम्मेदारी, सामुदायिक कार्रवाई और स्थिरता के सिद्धांतों पर आधारित था। उनके विचार और पहल भारत और दुनिया भर में स्वच्छता और स्वच्छता में सुधार के प्रयासों को प्रेरित करते है!

निष्कर्ष:-

स्वच्छता मानव जीवन का अभिन्न अंग है! स्वच्छता का सीधा संबंध स्वास्थ्य से है! इसीलिए स्वस्थ जीवन के लिए स्वच्छता अनिवार्य है! गांधीजी का सपना था स्वच्छ भारत का! गांधीजी का नजरिया इसको लेकर काफी रचनात्मक और क्रांतिकारी था! यह ऐसा काम था,जो सभी देशवासियों को एकता के सूत्र में जोड़ता था। चाहे सामूहिक उपवास हो, या फिर चरखा चलाना, या फिर साफ सफाई, स्वच्छता यह ऐसे काम थे, उच्च नीच या, भेदभाव का कोई स्थान नहीं था। महात्मा गांधी के मार्गदर्शन में भारत स्वतंत्र हुआ लेकिन स्वच्छ भारत की उनकी इच्छा अभी भी पूरी नहीं हुई है। उन्होंने कहा,' स्वच्छता स्वतंत्रता से अधिक महत्वपूर्ण है' और आगे कहा,' जब तक आप झाड़ू और बाल्टी अपने हाथों में नहीं लेते हैं, आप अपने शहरों को साफ नहीं कर सकते! तब तक स्वच्छता मिशन का उद्देश्य पूरा नहीं होता। स्वच्छता जीवन जीने की गांधीवादी तरीके का एक अभिन्न अंग था! उन्होंने सभी के लिए संपूर्ण स्वच्छता का सपना देखा! उन्होंने स्वच्छता को शारीरिक भलाई और स्वस्थ पर्यावरण के लिए एक महत्वपूर्ण पैलू माना है। भारत को स्वच्छ और अधिक अनुशासित बनाना है, तो स्वच्छ भारत अभियान को गांधीवाद की जरूरत है!

संदर्भ :

1. hindi.indiwaterportal.org.
2. www.mdwd.gov.in
3. www.mgsm.gujarat.in
4. शुल्क अरविंद, (२०१६) 'स्वच्छ भारत अभियान' बुक पब्लिकेशन्स लखनौ,
5. जाधव श्रीराम, (२००९) गांधीजी आणि सामाजिक समता' महात्मा गांधी अध्यासन केंद्र, औरंगाबाद.